

## दर्शनशास्त्र / PHILOSOPHY

## प्रश्न-पत्र I / Paper I

निर्धारित समय : तीन घंटे

Time allowed : Three Hours

अधिकतम अंक : 250

Maximum Marks : 250

## प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें :

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों में छपे हैं ।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं ।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए । उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे ।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए ।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी । यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो । प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए ।

## Question Paper Specific Instructions

**Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :**

There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI** and in **ENGLISH**.

Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.

The number of marks carried by a question / part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

## खण्ड A

### SECTION A

**Q1.** निम्नलिखित के लघु उत्तर लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 150 शब्दों में हों :

Write short answers to the following in about 150 words each :

10×5=50

(a) कांट के अनुसार अनुभव-निरपेक्ष संश्लेषणात्मक निर्णय कैसे समर्थनीय हैं ? स्पष्ट कीजिए ।

How are the synthetic a priori judgements justifiable according to Kant ? Explain.

10

(b) विट्गेंस्टाइन के अर्थ के प्रयोग सिद्धांत में 'भाषायी खेलों' की महत्ता स्पष्ट कीजिए ।

Bring out the significance of 'language games' in Wittgenstein's use theory of meaning.

10

(c) हुसर्ल के संवृतिशास्त्र (फिनोमिनोलोजी) में 'कोष्ठकीकरण' की महत्ता स्पष्ट कीजिए ।

Explain the significance of 'bracketing' in Husserl phenomenology.

10

(d) क्या लाइबनिज़ का पूर्व-स्थापित सामंजस्य का सिद्धांत अनिवार्यतः नियतत्ववाद (डिटर्मिनिज़्म) की ओर ले जाता है ? चर्चा कीजिए ।

Does Leibniz's theory of pre-established harmony necessarily lead to determinism ? Discuss.

10

(e) क्वाइन के "टू डॉग्मास ऑफ़ इम्पिरिसिज़्म" में दी गई युक्तियाँ किस सीमा तक समर्थनीय हैं ? चर्चा कीजिए ।

How far are Quine's arguments in "Two Dogmas of Empiricism" justified ? Discuss.

10

**Q2.** (a) प्लेटो के अनुसार, ज्ञान और विश्वास में भेद कीजिए । यह उनकी तत्वमीमांसा पर किस प्रकार आधारित है ? स्पष्ट कीजिए ।

Distinguish between knowledge and belief according to Plato. How is it based on his metaphysics ? Explain.

20

(b) देकार्तीय द्वैतवाद (कार्टीसियन डूअलिज़्म) के सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए उसकी समर्थक युक्तियों की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए ।

Explain the doctrine of Cartesian dualism and examine critically arguments in favour of it.

15

(c) ह्यूम के द्वारा कार्यकारण सिद्धांत की आलोचना का समीक्षात्मक मूल्यांकन कीजिए ।

Evaluate critically Hume's criticism of theory of causation.

15

- Q3.** (a) क्या इंद्रियानुभविक कथन निर्णायक रूप से सत्यापनीय हैं ? 'अर्थ के सत्यापन सिद्धांत' की परिसीमाओं की चर्चा कीजिए ।

Are empirical statements conclusively verifiable ? Discuss the limitations of 'verification theory of meaning'. 20

- (b) ट्रेक्टेटस के दर्शन में परमाणुवाद (ऐटोमिज़्म) की बर्ट्रांड रसेल द्वारा की गई व्याख्या से विट्टेनगेस्टाइन क्यों असहमत है ? चर्चा कीजिए ।

Why does Wittgenstein disagree with Bertrand Russell's interpretation of atomism in the philosophy of Tractatus ? Discuss. 15

- (c) क्या सामान्य बुद्धि की सफ़ाई में जी.ई. मूर द्वारा दी गई युक्तियाँ संतोषप्रद हैं ? कारण दीजिए ।

Are G.E. Moore's arguments in defence of common sense satisfactory ? Give reasons. 15

- Q4.** (a) किर्केगार्ड की वरण की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए । वरण की अधिनीतिशास्त्र में अवधारणा आदर्शक नीतिशास्त्र से किस तरह भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए ।

Explain Kierkegaard's concept of choice. How does the concept of choice in metaethics differ from normative ethics ? Explain. 20

- (b) किसी वस्तु के अस्तित्व को जानना कालिकता (टैंपोरेलिटी) के क्षितिज के सामने होता है, हैडेगर के इस दावे को प्रस्तुत करते हुए उसका मूल्यांकन कीजिए ।

State and evaluate Heidegger's claim that temporality is the horizon against which the being of any entity is understood. 15

- (c) अरस्तू के कार्यकारण सिद्धांत में प्रयुक्त, आकार एवं द्रव्य के सिद्धांत के महत्त्व को समझाइए ।

Explain the significance of Aristotle's doctrine of form and matter in his theory of causation. 15

खण्ड B

SECTION B

Q5. निम्नलिखित के लघु उत्तर लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 150 शब्दों में हों :

Write short answers to the following in about 150 words each :

10×5=50

- (a) “ज्ञान और जगत् की सीमाओं को मेरा इंद्रिय-प्रत्यक्ष निर्धारित करता है।” चार्वाक के इस दावे की चर्चा कीजिए।

“Limits of knowledge and world are determined by my sense perception.”

Discuss this claim of Carvakas.

10

- (b) बौद्ध दर्शन के सौत्रान्तिक एवं वैभाषिक संप्रदायों के मध्य ज्ञानमीमांसीय (एपिस्टेमोलॉजिकल) भेदों को स्पष्ट कीजिए।

Explain the epistemological differences between Sautrāntika and Vaibhāṣika schools of Buddhism.

10

- (c) अपनी तत्त्वमीमांसा के विकास में शंकर के दर्शन द्वारा ‘अध्यास’ की अवधारणा की महत्ता को स्पष्ट कीजिए।

Bring out the significance of the concept of adhyāsa in Sankara’s philosophy to develop his metaphysics.

10

- (d) क्या सांख्य दर्शन में प्रकृति के अस्तित्व के पक्ष में दी गई युक्तियाँ पर्याप्त हैं ? चर्चा कीजिए।

Are the arguments given in favour of existence of prakṛti adequate in Sāṃkhya philosophy ? Discuss.

10

- (e) क्या अर्थापत्ति प्रमाण को अनुमान प्रमाण में समाहित किया जा सकता है ? मीमांसा दर्शन के दृष्टिकोण से विवेचना कीजिए।

Can arthāpatti (postulation) be reduced to anumāna (inference) ?

Discuss it from the Mīmāṃsā point of view.

10

- Q6.** (a) चिरसम्मत भारतीय परम्परा में यथार्थता के सिद्धांतों में, कार्यकारण का सिद्धांत किस तरह केन्द्रीय भूमिका निर्वाह करता है ? विवेचन कीजिए ।  
How is the theory of causation central to the theories of Reality in classical Indian tradition ? Discuss. 20
- (b) कर्म की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए एवं जैन दर्शन के अनुसार उसके विभिन्न प्रकारों की विवेचना कीजिए ।  
Explain the concept of Karma and discuss its various types according to Jain philosophy. 15
- (c) किसी वस्तु के अभाव को न्याय दर्शन एवं मीमांसा दर्शन में किस प्रकार जाना जाता है ? विवेचन कीजिए ।  
How is an absence of an object known according to Naiyāyikās and Mīmāṃsakas ? Discuss. 15
- Q7.** (a) न्याय दर्शन में अलौकिक प्रत्यक्ष को स्वीकार करने के दार्शनिक निहितार्थों को उद्घाटित कीजिए ।  
Bring out the philosophical implications of introducing extraordinary (alaukika) perception in Nyaya philosophy. 20
- (b) सम्प्रज्ञात समाधि के स्वरूप एवं स्तरों को समझाइए । किस प्रकार प्रत्येक स्तर असम्प्रज्ञात समाधि की ओर अग्रसर करता है ?  
Explain the nature and levels of samprajnata samadhi. How does each level lead more towards asamprajnata samadhi ? 15
- (c) “पुरुष न बंधन में होता है, न मुक्त होता है और न वह संसरण (पुनर्जन्म) करता है” — सांख्य दर्शन के मोक्ष सम्बन्धी इस मत का परीक्षण कीजिए ।  
Examine the Sāṃkhya view on liberation that “the self is neither bound nor liberates, nor does it transmigrate”. 15
- Q8.** (a) शंकर, रामानुज एवं मध्व के दर्शन में ब्रह्म की प्रकृति किस प्रकार से भिन्न है ? आलोचनात्मक विवेचन कीजिए ।  
How does the nature of Brahman differ in the philosophy of Sankara, Ramanuja and Madhva ? Discuss critically. 20
- (b) शून्यता की अवधारणा को नागार्जुन किस प्रकार समझाते हैं ?  
How does Nagarjuna explain the concept of Sunyata ? 15
- (c) श्री अरविंद का पूर्ण योग किस प्रकार पातंजल योग का विकसित रूप है ? विवेचन कीजिए ।  
How is Sri Aurobindo's integral yoga an advancement over Pātanjala yoga ? Discuss. 15